AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

एक संचारक के रूप में ओशो की प्रासंगिकता

ORIGINAL ARTICLE

Author
विभाष कुमार झा
सहायक प्राध्यापक, जनसंचार विभाग
अग्रसेन महाविद्यालय
रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

शोध सार

ओशो, आचार्य रजनीश, भगवानश्री रजनीश या ओशो जैसे अलग–अलग नामों से चर्चित होने वाले रजनीश चन्द्रमोहन जैन ने बीसवीं सदी के उत्तरार्ध में भारत सहित दुनिया भर के लोगों को मानसिक और आध्यात्मिक रूप से प्रभावित किया है। ओशो धार्मिक संत–महात्माओं की दुनिया में एक ऐसे विरले चमकते हुए सितारे हैं, जिनका व्यक्तित्व सबसे अलग और अनूठा है। ओशो ने उस समय धार्मिक विषयों पर बोलना या प्रवचन देना शुरू किया जब आमतौर पर ऐसे विषयों को बहुत गंभीर और एक सीमित दायरे के भीतर चर्चा का विषय माना जाता था, लेकिन उन्होंने वेद, पुराण, उपनिषद, ब्राह्मण, आरण्यक, संहिता और स्मृतियों सहित गीता, महाभारत, रामायण, रामचरितमानस जैसे ग्रंथों और पौराणिक आख्यानों पर न केवल पूरे अधिकार से व्याख्या की बल्कि यदि इन ग्रंथों में कोई बात उन्हें पुरातन लगी, तो उन्होंने कड़े शब्दों में इनकी आलोचना भी की। ओशो अपनी किन–किन विशेषताओं की वजह से एक प्रभावशाली संचारक बने, इसे ही प्रस्तुत शोध आलेख में समाहित किया गया है।

मुख्य शब्द

अध्यात्म, जन संचार, समाज, दर्शन, प्रवचन, ओशो.

प्रस्तावना

ओशो का नाम बीसवी शताब्दी के कुछ बहुत ही प्रभावशाली उपदेशकों में लिया जाता है। वे समाज को घर्म–ग्रंथों से डराने की बजाय, नए सिरे से जागृत करना चाहते थे। दर्शनशास्त्र के विद्यार्थी के रूप में सागर से पढ़ाई करने के बाद जबलपुर के महाविद्यालय में दर्शनशास्त्र के प्राध्यापक के रूप में ओशो ने अपने करियर की शुरुआत की थी कुछ वर्षों तक अध्यापन कार्य करने के बाद जल्द ही उन्हें यह बात समझ में आ गई थी कि वे अब इस सामान्य सी नौकरी में सीमित रहने वाले नहीं है। खुद को परम–ज्ञान की प्राप्ति या आत्म–साक्षात्कार होने के सम्बन्ध में ओशो स्वयं बताते हैं, कि एक बार पेड़ पर चढ़कर ध्यान करते समय उन्हें पहली बार ऐसा महसूस हुआ कि उनका शरीर नीचे गिर पड़ा है और वे अभी भी पेड़ पर बैठे हुए हैं। इस दौरान पेड़ की शाख पर मौजूद उनके सूक्ष्म शरीर और घरती पर गिरे पड़े स्थूल शरीर के बीच एक चांदी जैसा पतला तार जुड़ा हुआ, उन्हें कुछ समय के लिए दिखाई देने लगा था। उस दिन उन्हें आत्म–ज्ञान की पहली झलक मिली। इसके बाद उन्होंने अनेक विशिष्ट और सामान्य लोगों से तमाम रहस्यवादी विषयों पर बात करना शुरू किया। समय के साथ इसका विस्तार होता गया इसी प्रक्रिया में उनके व्यक्तित्व और अध्ययन का विस्तार होता गया उनका दायरा बढ़ता गया। फिर

उन्होंने अपने प्रवचनों में तमाम सरल और जटिल बातों को शामिल करने लगे। इन विषयों को सरल तथा प्रभावी बनाने के लिए वे अपने प्रवचनों में कविता, शायरी, कहानी और लतीफों का इस्तेमाल भी आवश्यकता के अनुसार करने लगे। ओशो किसी विषय पर तात्कालिक भाषण की तरह, श्रोताओं से सीधे बात किया करते थे। हां यह जरूर है कि उनके प्रवचनों के बीच में आने वाली शायरी, कविता, कहानी और उद्धरण सहित अन्य जानकारियां उनके सहयोगी एक गत्ते पर लिखकर दिया करते थे, जिसे वे अपने सामने मेज पर एक तरफ रखा करते थे। जिस विषय पर उन्हें बोलना होता था, उसी से संबंधित कहानियां, कविता और शायरी का वे आवश्यकता के अनुसार इस्तेमाल किया करते थे।

ओशो को विस्तार से जानने के लिए यूँ तो बहुत सी पुस्तकें उपलब्ध हैं। किन्तु ओशो आश्रम द्वारा पर प्रकाशित और संकलित "आत्मकथा" विशेष रूप से सहायक है। करीब चौदह सौ पृष्ठों में प्रकाशित इस पुस्तक में ओशो के समूचे जीवन, और उनके उद्‌बोधनों के सारांश का विशद संकलन किया गया है। साथ ही उनसे जुडी विशेष घटनाओं को भी इसमें समाहित किया गया है। इस संकलन के अंश ओशो के प्रवचनों पर आधारित विभिन्न पुस्तकों से लिए गए हैं। ये पुस्तकें किसके द्वारा नहीं लिखी गई हैं, बल्कि ओशो के वचनों को ही मुद्रित करके इन्हें तैयार किया गया है।

शोध प्रविधि– वैयक्तिक अध्ययन

चूँकि, ओशो के जनसंचारक होने के प्रभाव तथा उनकी शैली और विषय वस्तु का समग्र अध्ययन किया जाना प्रस्तावित है, अतः इसके लिए वैयक्तिक अध्ययन (केस स्टडी) प्राविधि का चयन उपयुक्त प्रतीत होता है। एक संचारक के रूप में ओशो, ने जो प्रवचन दिए हैं, उन्हें उनकी इच्छा के अनुसार ही, बिना किसी संपादन के ज्यों का त्यों पुस्तक में समाहित किया गया है ताकि इन वचनों की मौलिकता बनी रहे। यहाँ तक कि ओशो अपने शिष्यों से विभिन्न स्थानों सहित अपने आश्रम या कम्यून में जो अनौपचारिक बातचीत किया करते थे, उन्हें भी किसी प्रकार के संपादन के बिना ज्यों का त्यों प्रकाशित किया गया है। पत्रकारों से वार्ता और साक्षात्कार भी इसी तरह प्रकाशित है। ओशो के प्रवचनों को अब तक भारत सहित दुनिया की विभिन्न भाषाओँ में अनुवाद किया जा चुका है। ओशो के प्रवचनों और बातचीत की आडियो रिकार्डिंग की शुरुआत 1960 के आसपास हुई। इससे पहले के उनके प्रवचनों को शिष्यों ने नोट करके पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया है।

ओशो के करीब चौतीस हजार घंटों के प्रवचनों में से अधिकांश हिस्सा हिन्दी में है। वहीँ कुछ भाग अंग्रेजी में भी है, जो उन्होंने विदेशों में दिए हैं। इन प्रवचनों के आधार पर, ओशो को एक प्रभावशाली संचारक बनाने वाली उनकी कुछ विशेषताओं को समझने का प्रयास इस शोध आलेख में किया गया है। उनमें से कुछ बिंदु इस प्रकार हैं:

1. ओशो अपने प्रवचनों के साथ ही अपने निजी जीवन से जुडी अनेक घटनाएँ और दुनिया भर के अन्य प्रसिद्ध– विलक्षण व्यक्तियों की कहानियां भी अक्सर सुनाया करते थे।
2. इन कहानियों को वे सिर्फ मनोरंजन के लिए नहीं, बल्कि प्रवचन में लिए गए विषय को स्पष्ट करने के लिए बताते थे।
3. ओशो अपने प्रवचन के दौरान विषय को रोचक तथा भावपूर्ण ढंग से स्पष्ट करने के लिए कविता और शायरी का भी अणि आर्य रूप से उपयोग किया जरते थे। इससे उनका प्रवचन बहुत ही प्रभावशाली बन जाता था।
4. अपने प्रवचनों को पुस्तक के रूप में प्रकाशित करने के विचार के बाद ओशो ने सहयोगियों से अनुरोध किया कि उनके शब्दों को संपादित न किया जाए, इसी वजह से उनके उद्धरणों/कहानियों में विभिन्न पुस्तकों में कुछ दोहराव भी दिखाई देते है।
5. अपनी गंभीर से गंभीर बात को लक्षित श्रोता समूह तक स्पष्ट तरीके से पहुंचाने के लिए ही ओशो ने बहुत ही सरल और रोजमर्रा की भाषा का उपयोग किया, जिसे हर कोई समझ सकता है।
6. ओशो ने जब और जहाँ भी किसी नए या अपरिचित शब्दावली (वोकेबुलरी) का उपयोग किया, वे उस शब्द की स्पष्ट व्याख्या कभी अनिवार्य रूप से किया। यदि किसी क्षेत्रीय प्रभाव के कारण कोई श्रोता किसी शब्द

का अर्थ न समझ सकें, तो उनकी सुविधा के लिए ओशो आश्रम ने उनके द्वारा उपयोग में लाये गए नए शब्दों के अर्थ के साथ एक शब्दकोष भी तैयार किया है।

7. जिन प्रवचनों में कोई कम चर्चित सन्दर्भ आया है, वहां इन प्रवचनों के पुस्तक–स्वरूप में सम्बंधित पृष्ट के नीचे नोट्स भी दिए गए हैं।
8. ओशो की विभिन्न पुस्तक के अंत में आवश्यकता के अनुसार उस विषय से सम्बंधित अतिरिक्त जानकारी भी दी जाती है।
9. अपने जीवन के दौरान, ओशो को कई नामों से जाना जाता रहा। बचपन में उनके परिवार वाले उन्हें राजा कहकर पुकारते थे। युवा होकर वे रजनीश हुए। इसके पश्चात् 1960 के दशक में प्रारंभिक प्रवचनों के समय उन्हें आचार्य रजनीश कहा जाने लगा। वर्ष 1971 से उन्होंने अपना नाम भगवान श्री रजनीश रखा फिर 1988 से उन्होंने खुद को ओशो कहना आरंभ किया। ओशो का अर्थ है– 'सागर से एक हो जाने का अनुभव करने वाला।' जीवन भर ज्ञान और अनुभूति के आवरण में रहते हुए उन्हें अंत में यही शब्द उपयुक्त प्रतीत हुआ।
10. पुणे के ओशो कम्यून स्थित उनकी समाधि पर लिखे गए इस वाक्यांश से ओशो के महत्व को समझा जा सकता है,– वहां लिखा हुआ है– ''न कभी जन्मे, न कभी मरे। वे धरती पर 11 दिसंबर, 1931 से 19 जनवरी 1990 के बीच आए थे।'' स्पष्ट है कि ओशो ने इस वाक्यांश से भी अपने व्यक्तित्व के सम्बन्ध में लक्षित समूह को एक स्थायी विचार का संचार निश्चित रूप से किया है।

विषय–वस्तु का विश्लेषण

ओशो के सभी प्रवचन विलक्षण हैं। उनकी सामग्री, भाषा और प्रस्तुति के आधार पर यह स्वीकार करना सरल हो जाता है कि उनमें सफल संचारक के प्रायः सभी गुण मौजूद थे। इसे और अधिक स्पष्ट करने के लिए उनके दो प्रवचनों की संक्षिप्त चर्चा यहाँ की जा रही है। अपनी प्रवचन श्रृंखला "मैं कहता आंखन देखी" में ओशो कहते हैं– "मैं अंधों की बस्ती में रोशनी बेचता हूं।" वे कहते हैं, – "एक आदमी है, अंधा है। तो हमें ख्याल होता है कि शायद उसको अँधेरा ही दिखाई देता होगा। यह हमारी भ्रांति है। अँधेरा देखने के लिए भी आँख के बिना अँधेरा भी दिखाई नहीं पड सकता..... क्योंकि अँधेरा जो है, वह आँख का अनुभव है। जिससे प्रकाश का अनुभव होता है, उसी से अंधकार का भी अनुभव होता है। जो जन्मांध है, उसे अंधेरे का भी कोई पता नहीं। अँधेरा भी जानेगा कैसे?..... मैं वह कहा रहा हूं जो मेरी प्रतीति है, मेरा अनुभव है। मैं वह कहा रहा हूं जो कि शास्त्रों की अन्तर्निहित आत्मा है। मगर शास्त्रों के शब्द मैं उपयोग नहीं कर रहा हूं। शब्द तो बदल दिए जाने चाहिए। अब तो हमें नये शब्द खोजने होगे। हर सदी को अपने शब्द खोजने होते है। तो मैं वहीं कहा रहा हूं जो बुद्ध ने कहा, कृष्ण ने कहा, मुहम्मद ने कहा, जीसस ने कहा, लेकिन अपने ढंग से....."

प्रसंगवश चूँकि जब ओशो जबलपुर में रहते हुए आरंभिक दिनों में आचार्य रजनीश के रूप में लोकप्रिय हो रहे थे, और अपने प्रवचनों से लोगों को प्रभावित् करने लगे थे, उसी दौर में वहां देश दुनिया के जाने माने व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई भी रहते थे। उन्होंने अपने तमाम व्यंग्य लेखों में एक लेख ओशो को लक्षित करते हुए भी लिखा था। जिसका शीर्षक था– "टार्च बेचने वाला"। आप पहले की पंक्तियों में कहे गए ओशो के कथन (मैं अंधों की बस्ती में रोशनी बेचता हूं।) से इसका सन्दर्भ जोड़ सकते हैं।

इसी प्रकार "जिन खोजा तिन पाइयां"– शीर्षक से प्रवचनों में ओशो कहते हैं– "खोजना और मांगना दो अलग बातें हैं। असल में, जो खोजना नहीं चाहता वही मांगता है। खोजना और मांगना एक तो हैं ही नहीं, विपरीत बातें हैं। खोजने से जो बचना चाहता है वह मांगता है, खोजी कभी नहीं मांगता और खोज और मांगने की प्रक्रिया बिलकुल अलग है। मांगने में दूसरे पर ध्यान रखना पड़ेगा जिससे मिलेगा और खोजने में अपने पर ध्यान रखना पड़ेगा जिसको मिलेगा। यह तो ठीक है कि साधक के मार्ग पर बाधाएं हैं, लेकिन साधक के मार्ग पर बाधाएं हैं, अगर हम ठीक से समझें तो इसका मतलब होता है कि साधक के भीतर बाधाएं हैं; मार्ग भी भीतर है और अपनी बाधाओं को समझ लेना बहुत कठिन नहीं है।"

इन दोनों उदाहरणों से यह स्पष्ट है कि एक संचारक के रूप में ओशो अपने विषय के प्रति कितने सजग रहते थे। वे व्याख्या करते समय में भी विषय को समझाने के लिए केवल आवश्यक वाक्यों का ही प्रयोग करते थे, और एक भी वाक्य अतिरिक्त नहीं बोलते थे। गंभीर विषय को समझाने का उनका ढंग भी कितना साफ और सरल होता था, यह "मैं कहता आंखन देखी"– प्रवचन के आरंभिक वाक्यों से ही समझाजा सकता है। यही विशेषता उनके प्रायः सभी प्रवचनों में झलकती है। ओशो ने अपने प्रवचनों में आम–फहम और ख़ास–फहम सहित सूफियाना और इश्के–हक़ीकी का मिजाज़ रखने वाली शायरी का भी बखूबी इस्तेमाल किया। उनके पर प्रवचनों में आये कुछ ख़ास–फहम के अशआर यहाँ दिए जा रहे हैं।

जब कोई तामीर बे–तखरीब हो सकती नहीं
तो खुद मुझे अपने लिए बर्बाद होना चाहिए

इसी तरह साहिर लुधियानवी की ग़ज़ल की कुछ पंक्तियाँ जो बाद में फिल्म में भी शमिल हुई, उन्हें भी ओशो ने अपने विषय के अनुरूप बनाकर प्रवचन में शामिल किया। उसी ग़ज़ल का ये शेर काबिले–गौर हैः

जो बात तुझमे है तेरी तस्वीर में नहीं
रंगों में तेरा अक्स ढला तू न ढल सकी,
साँसों की आंच, जिस्म की खुशबू न ढल सकी
तुझमें जो लोच है, तेरी तहरीर में नहीं

ओशो के प्रवचनों में भारत के तमाम श्रेष्ठ कवियों की ऐसी कविताओं का समावेश भी होता, जो उनके किसी विषय को स्पष्ट करने में सहायक रहे। ऐसी ही एक कविता की झलक इस प्रकार हैः

जल रहा दीपक किसी के प्रीत का आधार पाकर
हो भले ही या न हो पूजन कभी स्वीकार मेरा
छीन सकता कौन है पर अर्चना अधिकार मेरा
साध कुछ बाकी नहीं है यह अमर अधिकार पाकर

श्रोता के मनोविज्ञान की समझ

एक संचारक के रूप में ओशो ने मनुष्य के मनोविज्ञान को भी गहराई से समझा है। वे कहते हैं कि "एक विषय के रूप में मनोविज्ञान की रचना करने वाले सिगमण्ड फ्रायड ने केवल शारीरिक (पैथोलॉजिकल) मनोविज्ञान की स्थापना की है। इसके बाद मास्लोव, जानोव, असगिओली, पर्ल्स जैसे मनोविज्ञानी इस विषय का विस्तार करने वाले विशेषग्य हुए। ओशो अपने विषय में कहते हैं कि उन्होंने मनोविज्ञान को शरीर के तल से आगे ले जाने का प्रयास किया है। वे ध्यान के माध्यम से जागृत व्यक्ति के मनोविज्ञान को उद्घाटित कर रहे हैं, बुद्धों के मनोविज्ञान को स्थापित करने की कोशिश कर रहे हैं। ओशो यह भी कहते हैं कि सामान्य मनुष्य के मनोविज्ञान का अध्ययन करते समय वे जानने का प्रयास कर रहे हैं कि एक साधक को आत्म–साक्षात्कार के मार्ग पर, स्वयं के जागरण के मार्ग पर कौन–सी कठिनाइयाँ मिलती हैं। उनका कहना है कि– "भौतिक जगत के सारे मनोविज्ञान शरीर रचना से लेकर मन तक सीमित हैं। लेकिन बुद्धों का मनोविज्ञान अ–मन (निर्विचार) का होगा। यह हर पहलू में, हर दिशा में सामान्य मनोविज्ञान के बिल्कुल विपरीत होने जा रहा है, क्योंकि यह एक बिल्कुल नया आयाम है – जिसे पहले कभी छुआ नहीं गया, कभी इसके बारे में सोचा भी नहीं गया। मन का अध्ययन करना आसान है। किन्तु अ–मन (निर्विचार) का अध्ययन करना बहुत कठिन, लगभग असंभव है।"

उन्होंने जीवन के रहस्यों पर अपने अनेक प्रवचनों में ग्रीक संतों के साथ ही जेन फकीरों के सूत्रों को भी व्याख्यायित किया। साथ ही पश्चित के अनेक दार्शनिकों के सूत्र को भी सरल शब्दों में पुनः परिभाषित किया। यदि ओशो ने इन संतों– फकीरों पर बात नहीं की होती, तो भारतीय समाज ऐसे अनेक विलक्षण व्यक्तित्वों के विषय में शायद जान ही न पाता। ओशो के इस योगदान के लिए भी समाज उनका ऋणी रहेगा। इन विदेशी संत फरीकों पर ओशो के विचार हमारे समाज के लिए आज भी उपयोगी हैं, और आगे भी रहेंगे।

निष्कर्ष

अपने गहन दृष्टिकोण के कारण ही ओशो एक संचारक की हैसियत से बीसवीं सदी में सबसे विलक्षण दिखाई देते हैं। चूँकि उन्होंने जब पहले–पहल अपने प्रवचनों से मनुष्य के मनोविज्ञान को उद्घाटित करना आरंभ किया, तो वह समय 1960 के दशक का आरंभिक कालखंड था। तब समाज सेक्स जैसे विषय को सार्वजनिक चर्चा में स्वीकार नहीं पता था, भले ही वह उस विचार से दिन–रात स्वयं प्रभावित रहता हो। ओशो ने इसी दोहरेपन को बेनकाब कर दिया। उन्होंने कहा कि प्रेम को समझने से पहले मनुष्य को सेक्स को जानना पड़ेगा। खजुराहों के मंदिरों की बाहरी दीवारों पर उत्कीर्ण मिथुन–मूर्तियों की चर्चा करते हुए ओशो ने कहा कि हमारे पूर्वज इस मामले में बहुत्जाग्रुक थे तभी तो उन्होंने काम मुद्राओं वाली प्रतिमाओं को मंदिर कि बाहरी दीवार पर उत्कीर्ण किया, जिसका संकेत यही था कि काम–वासना जीवन का बाहरी पहलू है। इससे मुक्त होने पर ही हम जीवन के भीतरी जगत में प्रवेश कर पाते हैं, जहाँ हमारी आत्मा का ईश्वर से साक्षात्कार होता है। लेकिन उनके ऐसे उदाहरणों के करण विवाद पैदा होने लगा। इसी कड़ी में उनका शुरूआती प्रवचन – "सम्भोग से समाधि की ओर" भी विवाद को बढाने वाला रहा, जबकि इस पुरे प्रवचन में कहीं भी सेक्स के आपत्तिजनक स्वरूप की लेशमात्र चर्चा भी नहीं थी। यही पर ओशो अपने मूल उदेश्य का सम्प्रेषण करने में कहीं कहीं चूक गए। हालाँकि उन्होंने इसे अपनी कमी नहीं माना। उनका कहना था कि लोग कि सत्य से आँखें चुरा रहे हैं, जबकि सेक्स का विचार दिन भर उनके भीतर चल ही रहा है।

भारत में साठ के दशक में समाज काफी पुरातन था, लेकिन अगले तीस वर्षों में तकनीक के विकास के कारण देश में तेजी से बदलाव देखने को मिला। इस वजह से ओशो की स्वीकार्यता भी तेजी से बढ़ने लगी। ओशो ने अपने अंतिम दिनों में कहा भी था कि आज भले ही भारत का समाज उनसे परहेज कर रहा हो, लेकिन अगले बीस वर्षों में उनके द्वारा कही गई सभी बातें सामान्य हो जाएँगी, और अगली पीढ़ी इन बातों को सजहता से स्वीकार भी कर लेगी। आज ओशो के अवसान के लगभग तीस वर्षों के बाद उनकी कही हुई बात अक्षरशः प्रमाणित हो रही है। इसी से यह समझा जा सकता है कि एक संचारक के रूप में वे उस समय ही भारत के भविष्य को देख पा रहे थे, और यह भी कह रहे थे कि वे अगली पीढ़ी के लिए ज्यादा प्रासंगिक हो जायेंगे। एक संचारक के रूप में उनकी भविष्य–दृष्टि ही उनकी सफलता को प्रमाणित करती है।

सन्दर्भ सूची

1. मै कहता आंखन की देखी – (10 मार्च 1971, मुम्बई)
2. जिन खोजा तिन पाइयां – (02 से 05 मई, 1970 नारगोल)
3. ओशो बायोग्राफी–– ओशो वर्ल्ड द्वारा संकलित
4. अंग्रेजी प्रवचन– सीक्रेट ऑफ सीक्रेट्स (14 अगस्त 1978 पूना)
5. अंग्रेजी प्रवचन– जेन– पाथ ऑफ पैराडोक्स (11 जून 1977 पूना)
6. ध्यान सूत्र – (12 से 15 फरवरी 1965 महाबल्लेश्वर)
7. सम्भोग से समाधि की ओर – (28 से 30 सितम्बर 1968 मुंबई)
8. मै मृत्य सिखाता हूँ (28 से 31 अक्टूबर 1969, द्वारका)
9. कृष्ण मेरी दृष्टि में (20 जून 1970, मुंबई)
10. मै कौन हूँ (4 से 06 मार्च 1967, अहमदाबाद)
11. महावीर मेरी दृष्टि में (17 से 23 सितम्बर, 1969, श्रीनगर)
12. एक ओंकार सतनाम (12 से 14 अप्रैल 1969, अमृतसर)

––==00==––